

डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 19, पत्र शैली

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

पुराने नियम में भविष्यवाणी शैली पर चर्चा करते समय, हमने देखा कि विद्वान अक्सर दो शब्दों, पूर्व कथन और पूर्व कथन के बीच अंतर करते हैं। यह सामान्य भाषा है जो आपको विशेष रूप से व्याख्याशास्त्र प्रकार या बाइबिल व्याख्या प्रकार की पाठ्यपुस्तकों में मिलेगी जो वर्णन करती है कि भविष्यसूचक साहित्य क्या करता है। और आमतौर पर, विद्वान इस तथ्य पर जोर देंगे कि पुराने नियम की भविष्यवाणी मुख्य रूप से भविष्य बताने वाली है, या आप उसका वर्णन करने के लिए जिस भी भाषा का उपयोग करना चाहते हैं।

अर्थात्, भविष्यवक्ता मुख्य रूप से भविष्य या भविष्य में घटित होने वाली कुछ घटनाओं की भविष्यवाणी करने से चिंतित नहीं हैं, हालांकि वे ऐसा करते हैं, बल्कि वे मुख्य रूप से पाठक की वर्तमान स्थिति के लिए एक संदेश घोषित करने में रुचि रखते हैं। और हमने कहा कि इज़राइल, जब इज़राइल राष्ट्र मूर्तिपूजा में चला जाएगा और ईश्वर के साथ अपने अनुबंध के दायित्वों से मुक्त जाएगा, तो ईश्वर उन्हें वाचा के प्रति वफादारी में वापस बुलाने और विफलता के परिणामों के बारे में चेतावनी देने के लिए एक भविष्यवक्ता को खड़ा करेगा। वाचा के रिश्ते का पालन करें, और यहां तक कि इस्राएल और अन्य राष्ट्रों को उनके पापों के कारण न्याय भी सुनाएं। लेकिन हमने यह जरूर कहा कि भविष्यवक्ता उस काम में लगे रहते हैं जिसे कुछ छात्र भविष्यवाणी कहते हैं, यानी भविष्य का वादा करना या अनुमान लगाना या भविष्यवाणी करना।

हमने कहा कि कभी-कभी किसी को अपने क्षितिज पर पाठकों के तत्काल भविष्य के बीच अंतर करना पड़ता है, न कि अधिक दूर के भविष्य में, जो कि ब्रह्मांड का समापन और संपूर्ण विश्व के समापन के लिए भगवान की योजना होगी, अक्सर युगांतशास्त्र के रूप में जाना जाता है, अंत के लिए भगवान के इरादे से संबंधित चीजें। लेकिन मैंने यह भी सुझाव दिया है कि हमें उन अटकलों के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है कि भविष्यवाणी का पाठ कैसे पूरा होगा और हमें उन विभिन्न तरीकों के बारे में भी जागरूक रहना होगा जिनसे हम भविष्यवाणी के पाठ को पूरा होते

हुए पाते हैं। कभी-कभी हमें भविष्यसूचक पाठ मिलते हैं जो नए नियम में बिल्कुल सीधे तरीके से पूरे होते हैं।

हम मैथ्यू अध्याय 2 में मीका अध्याय 2 या मीका अध्याय 5 के उद्धरण के बारे में पहले ही थोड़ी बात कर चुके हैं जहां मीका की बेथलहम में एक शाही व्यक्ति के जन्म की भविष्यवाणी काफी सीधे तरीके से पूरी होती प्रतीत होती है। दूसरी ओर, हम देखते हैं कि जिसे कभी-कभी टाइपोलॉजिकल या अनुरूप प्रकार की पूर्ति कहा जाता है, जहां पुराने नियम के लेखक जरूरी नहीं कि दूर के भविष्य में एक निश्चित घटना की भविष्यवाणी कर रहे हों, बल्कि इसके बजाय हम पुराने नियम के पाठ में एक व्यक्ति या एक घटना या कुछ और पाते हैं। वह दोहराया जाता है, कुछ ऐसा जो एक प्रकार या पैटर्न के रूप में कार्य करता है जिसे मसीह में पूर्णता के प्रकाश में अपने लोगों के साथ भगवान के व्यवहार में बड़े पैमाने पर उठाया और दोहराया जाता है। तो दृढ़ विश्वास यह है कि वही ईश्वर जो पुरानी वाचा के तहत अपने वादों को पूरा करने और अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए काम कर रहा है, उसी तरह नई वाचा के मोक्ष के तहत अपने वादों को पूरा करने के लिए फिर से समान लेकिन बड़े तरीके से काम कर रहा है जिसका उद्देश्य में उद्घाटन किया गया है। ईसा मसीह का।

तो फिर, कभी-कभी आप एक बहुत ही सीधी-सादी पूर्ति पाते हैं, कभी-कभी आप अधिक अनुरूप या टाइपोलॉजिकल प्रकार की पूर्ति पाते हैं। उससे संबंधित समय में, कभी-कभी आप नए नियम के पाठ को पूर्णता का चित्रण पाते हैं जो अधिक आध्यात्मिक प्रतीत होता है जो सीधे भौतिक या शाब्दिक तरीके से नहीं होता है जैसा कि कोई इसे पुराने नियम में चित्रित पाता है। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम अध्याय 15 में, हमें ये शब्द मिलते हैं जहां प्रसिद्ध प्रेरितिक परिषद या यरूशलेम परिषद में जहां पॉल और अन्य लोग इस सवाल पर बहस कर रहे हैं कि अन्यजातियों को भगवान के लोग बनने के लिए क्या आवश्यक है? क्या उन्हें मोज़ेक कानून का पालन करना होगा या नहीं? और अधिनियमों में, हम इस उद्धरण को ईश्वर के लोगों में अन्यजातियों को शामिल करने को उचित ठहराते हुए पाते हैं।

श्लोक 16 और 17 भी, जो दिलचस्प रूप से पुराने नियम में अमोस अध्याय 9 और श्लोक 11 से एक उद्धरण है, जो डेविडिक राजशाही की बहाली की प्रत्याशा या भविष्यवाणी है। और अब ध्यान दें कि इसे यहाँ प्रेरितों के काम अध्याय 15 में उद्धृत किया गया है। इसके बाद, मैं वापस आऊँगा और दाऊद के गिरे हुए तम्बू को फिर से बनाऊँगा, उसके खंडहरों को मैं फिर से बनाऊँगा और मैं इसे पुनर्स्थापित करूँगा ताकि बचे हुए मनुष्य प्रभु और उन सभी अन्यजातियों की तलाश कर सकें जो इसे धारण करते हैं नाम, भगवान कहते हैं, जो उन चीजों को करता है और युगों से जाना जाता है।

दिलचस्प बात यह है कि, लेखक को डेविडिक राजशाही की बहाली और राष्ट्रों पर शासन की आशा करने वाले अमोस पाठ की पूर्ति पहले से ही विश्वास, यीशु मसीह, मसीहा में जवाब देकर अन्यजातियों को ईश्वर के एक लोगों में शामिल करने में पूरी होती दिख रही है। . अब, क्या भविष्य में इसकी एक और पूर्ति होगी जो अधिक सख्ती से भौतिक होगी, इसकी संभावना है। लेकिन मुद्दा यह है कि नए नियम के लेखक अक्सर विशेष रूप से राष्ट्रीय इज़राइल और उन पर शासन करने वाले राजा के साथ डेविडिक राजशाही की बहाली के संदर्भ पाते हैं और पाते हैं कि वे भविष्यवाणियाँ ईसा मसीह और उनके लोगों, चर्च के पहले आगमन में अक्सर पूरी होती हैं।

पूर्ति की एक और विशेषता जब आप विचार करते हैं कि पुराने नियम के पाठों को नए नियम में कैसे उठाया जाता है, तो ध्यान में रखें कि कभी-कभी आपको ऐसे पाठ मिलेंगे जो मसीह के पहले आगमन और मसीह के दूसरे आगमन दोनों में पूर्णता प्राप्त करेंगे। अर्थात्, मुझे ऐसा लगता है कि पुराने नियम के कुछ पाठ, जो भविष्य में पूर्ति की आशा करते हैं, दो चरणों में पूरे होते हैं, जो यीशु के पहले और दूसरे आगमन के अनुरूप हैं। अर्थात्, मसीह के प्रथम आगमन पर, यीशु पूर्णता का उद्घाटन करते हैं, लेकिन अपने दूसरे आगमन पर, वह इसे पूर्ण करते हैं।

और यह पुराने नियम की पूर्ति की नए नियम की समझ या युगांत विज्ञान की नए नियम की समझ में लिपटा हुआ है। अर्थात्, जिसे पुराने नियम ने अक्सर अंतिम चरम घटना के रूप में प्रत्याशित किया था जो वर्तमान युग को समाप्त कर देगा और एक नए युग का उद्घाटन करेगा, नए नियम में उस घटना को अक्सर दो भागों में विभाजित देखा जाता है। एक भाग मसीह के पहले आगमन

के अनुरूप है जो इसका उद्घाटन करता है, दूसरा भाग समाप्ति के अनुरूप है, मसीह का दूसरा आगमन है, जो इसे इसके निष्कर्ष पर लाता है।

इसलिए कभी-कभी आपको इस बात से अवगत होने की आवश्यकता है कि भविष्यसूचक पाठों को मसीह के पहले आगमन और मसीह के दूसरे आगमन दोनों में पूर्णता मिलेगी। भविष्यवाणी साहित्य के बारे में पूर्ति के संदर्भ में एक आखिरी बात यह कही जा सकती है, खासकर तब जब हम इस बारे में अनुमान लगाने की प्रवृत्ति रखते हैं कि कोई चीज़ कैसे पूरी होगी या क्या हमारे दिन और उम्र में कुछ घटनाएं पुराने नियम के भविष्यवाणी ग्रंथों की पूर्ति हैं और हम इसके कितने करीब हैं। इस तरह की अटकलों का अंत, क्या मुझे यह ध्यान देना शिक्षाप्रद लगता है कि यीशु मसीह के पहले आगमन पर कैसे पूर्ति हुई और विभिन्न व्यक्तियों ने उस पर कैसे प्रतिक्रिया दी, विशेष रूप से यहूदी नेताओं ने कैसे पाया कि वास्तव में उन्होंने मसीह को अस्वीकार कर दिया क्योंकि वे इसके लिए तैयार नहीं थे न ही उन्होंने भविष्यवाणी को उस तरह से पूरा होते देखा, जिसकी उन्हें उम्मीद थी। तो यह लगभग वैसा ही है जैसे यीशु मसीह के पहले आगमन पर हम भविष्यवाणी को बहुत अप्रत्याशित तरीके से पूरा होते हुए पाते हैं और मुझे आश्चर्य है कि अगर कुछ मामलों में यह एक मॉडल या कम से कम एक संभावना प्रदान नहीं करता है कि भगवान अप्रत्याशित तरीके से चीजों को पूरा कर सकते हैं भविष्य में उनके दूसरे आगमन पर, इसलिए हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए और अटकलों से बचना चाहिए कि यह कैसे पूरा होगा और वास्तव में यह कहां, कब और कैसा दिखेगा, उसी तरह जैसे भगवान ने अपने वादे पूरे किए और पूरे किए मसीह के पहले आगमन पर पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ बहुत ही अप्रत्याशित तरीके से उसके लिए एक संभावना खोलती हैं, क्योंकि कुछ लोगों के पास कुछ तरकीबें हैं और अभी भी कुछ रहस्य हैं या अभी भी चीजों को इस तरह से पूरा कर रहे हैं जो बहुत अप्रत्याशित है फिर भी अभी भी स्पष्ट पूर्ति में है और उन वादों और भविष्यवाणियों के अनुरूप है जो उसने किए हैं।

जब कोई पुराने से नए नियम की ओर बढ़ता है तो विभिन्न प्रकार की पूर्ति से अवगत रहें। जाहिर तौर पर मुझे लगता है कि कोई एक और प्रकार जोड़ सकता है और वह यह है कि कुछ भविष्यवाणियां केवल युगांतिक परिणति में ही पूरी होती प्रतीत होती हैं। न्याय की कुछ भविष्यवाणियाँ और न्याय में ब्रह्मांड का विघटन और एक बिल्कुल नए ब्रह्मांड, एक बिल्कुल नए

ब्रह्मांड का निर्माण, उनमें से कुछ भविष्यवाणियाँ पूरी तरह से युगांतशास्त्रीय समापन में अपनी पूर्ति पाती प्रतीत होती हैं।

पुराने नियम के पाठ में मिलने वाली विभिन्न प्रकार की पूर्ति से अवगत रहें। अंत में, भविष्यवाणी साहित्य और भविष्यवाणी पाठ की व्याख्या के बारे में कहने के लिए आखिरी बात यह है कि भविष्यवाणी पाठ का प्राथमिक कार्य और उद्देश्य पवित्र जीवन के लिए प्रोत्साहन और चेतावनी या प्रोत्साहन और उपदेश है। पुराने नियम के भविष्यसूचक पाठ का प्राथमिक उद्देश्य भविष्य की भविष्यवाणी करना नहीं है जैसा कि हमने कहा था कि वे केवल क्रिस्टल बॉल में यह देखने के लिए नहीं देख रहे हैं कि भविष्य में क्या छिपा है।

लेकिन इसके बजाय भविष्यसूचक ग्रंथ मुख्य रूप से भगवान के लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए हैं जो मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं या उन लोगों को चेतावनी देने के लिए हैं जो भटकने के लिए प्रलोभित हैं और भगवान के लोगों को पवित्र जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करने और चेतावनी देने के लिए हैं। और भविष्यसूचक साहित्य की कोई भी व्याख्या जो वहां से शुरू नहीं होती, शुरुआत में ही गलत रास्ते पर है। लेकिन इसके बजाय हमें मुख्य रूप से भविष्यसूचक साहित्य को अपने लोगों के लिए ईश्वर के निरंतर प्रोत्साहन और प्रोत्साहन के रूप में पढ़ना चाहिए ताकि वे उसकी बात मानें, चाहे कोई भी कीमत चुकानी पड़े।

इसलिए हमने पुराने नियम के कुछ ही साहित्यिक प्रकारों को देखा है और बहुत कुछ कहा जा सकता है। हमने कथा के बारे में बात नहीं की क्योंकि हमने कथा आलोचना के अंतर्गत कुछ कथा तकनीकों और कहानी तकनीकों के बारे में संक्षेप में बात की। और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है।

हमने कविता और काव्य प्रकार के साहित्य पर बहुत संक्षेप में चर्चा की। हमने कानूनी या कानून, इज़राइल के कानून, कानूनी साहित्य और भविष्यवाणी साहित्य को भी देखा जो पुराने नियम में साहित्यिक रूपों या शैलियों का बड़ा हिस्सा बनता है। लेकिन मैं अब आगे बढ़ना चाहता हूं और न्यू टेस्टामेंट और विभिन्न साहित्यिक शैलियों पर भी विचार करना चाहता हूं जो न्यू टेस्टामेंट

दस्तावेजों को बनाते हैं, यह महसूस करते हुए कि जब हम बाइबिल पढ़ते हैं तो हम केवल एक अखंड दस्तावेज़ नहीं पढ़ रहे हैं जो शुरू से अंत तक एक समान है बल्कि हम एक दस्तावेज़ पढ़ रहे हैं जो स्पष्ट रूप से एक एकता प्रदर्शित करता है कि साहित्यिक रूपों और साहित्यिक प्रकारों की विविधता है।

और कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि यह सवाल पूछना कितना दिलचस्प होगा कि अगर भगवान आज अपने लोगों के सामने खुद को प्रकट करें कि कौन सा साहित्यिक मीडिया या कौन सा साहित्यिक रूप होगा। लेकिन पुराने नए नियम में भगवान ने उस समय के दौरान संचार के बहुत ही सामान्य और मानक साहित्यिक रूपों और साधनों के माध्यम से खुद को प्रकट किया। और नए नियम में मैं जो करना चाहता हूँ वह तीन साहित्यिक शैलियों पर ध्यान केंद्रित करना है जो मोटे तौर पर पुराने नियम को बनाते हैं या मुझे खेद है कि नए नियम को बनाते हैं और तीन शैलियां कथात्मक हैं।

इसमें सुसमाचार और अधिनियम शामिल होंगे, हालांकि यह कहना जरूरी नहीं है कि वे अपने साहित्यिक रूपों में समान हैं। कुछ लोग गॉस्पेल को अधिनियमों से अलग करेंगे और मैं अधिनियमों पर चर्चा करने में ज्यादा समय नहीं बिताऊंगा, लेकिन हम सामान्य रूप से कथा के बारे में थोड़ी बात करेंगे और नए नियम की कथा को पढ़ने और व्याख्या करने में कुछ अतिरिक्त कारकों के बारे में बात करेंगे, विशेष रूप से सुसमाचार के प्रकाश में। यह किस प्रकार का साहित्य है। और फिर दूसरा साहित्यिक रूप जो कोई पाता है या साहित्यिक शैली जो कोई नए नियम में पाता है वह पत्र या पत्र होगा जो गॉस्पेल और कथा साहित्य के बाद गॉस्पेल और एक्ट्स न्यू टेस्टामेंट के बाकी हिस्सों का बड़ा हिस्सा बनाते हैं। पॉल की पत्रियों या पॉल के पत्रों के रूप में।

और फिर अंत में रहस्योद्घाटन की पुस्तक सर्वनाश जो अपने आप में एक अद्वितीय साहित्यिक रूप है कि यह वास्तव में दो या तीन साहित्यिक प्रकारों का संयोजन है और जो कई प्रश्नों का कारण बनता है या उठाता है कि इससे क्या फर्क पड़ता है जिस तरह से हम इसे पढ़ते हैं। लेकिन दूसरी बात पर आगे बढ़ने से पहले यह कहना होगा कि यह पुराने नियम के समान है, यहां तक

कि जब हमारे पास इनमें से कुछ साहित्यिक रूपों जैसे कि कथा या पत्र-पत्रिका साहित्य पत्र के साथ समानताएं हो सकती हैं, तब भी हम निश्चित नहीं हो सकते हैं कि हमें पढ़ना चाहिए उन्हें उसी तरह से जैसे हम पहली शताब्दी में अपने पत्र या आख्यान या कहानियाँ पढ़ते थे। इसलिए पर्याप्त समानताएं हैं जो यह समझना संभव बनाती हैं कि क्या हो रहा है लेकिन हमें एक प्राचीन कथा और एक आधुनिक जीवनी या एक प्राचीन पत्र के बीच कुछ अंतरों को भी समझने की जरूरत है और यह क्या करता है और इसे एक साथ कैसे रखा गया है एक आधुनिक पत्र से तुलना।

इसलिए एक बार फिर गॉस्पेल से शुरुआत करते हुए मैं केवल गॉस्पेल की व्याख्या पर अतिरिक्त टिप्पणियों पर कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। हमने कथात्मक आलोचना और साहित्यिक आलोचना के अंतर्गत कथात्मक दृष्टिकोणों के बारे में थोड़ी बात की जैसे कि चरित्र-चित्रण और कथानक और संरचना आदि को देखना और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और पाठ में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों को उजागर करना।

इसलिए मैं उस सामग्री को नहीं दोहराऊंगा, लेकिन मैं उससे आगे बढ़ना चाहता हूँ और नए नियम की कथा विशेष रूप से गॉस्पेल को समझने में कुछ अतिरिक्त विशेषताओं को देखना चाहता हूँ। और गॉस्पेल के साथ एक चीज़ यह है कि गॉस्पेल की साहित्यिक शैली की पहचान को अक्सर ऐतिहासिकता से संबंधित मुद्दों के साथ लपेट दिया गया है। यानी कभी-कभी गॉस्पेल को एक निश्चित प्रकार की साहित्यिक शैली के रूप में वर्गीकृत किया गया है जो काल्पनिक थी और कभी-कभी गॉस्पेल की ऐतिहासिकता के लिए इसके निहितार्थ और प्रभाव होते हैं जहां गॉस्पेल लेखक मुख्य रूप से केवल धर्मशास्त्र में रुचि रखते थे।

हम पहले ही धर्मशास्त्र के इतिहास विच्छेदन के बारे में थोड़ी बात कर चुके हैं। क्या गॉस्पेल को एक निश्चित साहित्यिक रूप, विशेष रूप से काल्पनिक रूप में वर्गीकृत करने का मतलब यह है कि गॉस्पेल लेखक विश्वसनीय इतिहास नहीं लिख रहे हैं या इतिहास लिखने में बिल्कुल भी रुचि नहीं रखते हैं? इसलिए कभी-कभी सुसमाचार शैली की पहचान सुसमाचार की ऐतिहासिकता के मुद्दों से जुड़ी होती है। फिर मैं गॉस्पेल और न्यू टेस्टामेंट कथा साहित्य से संबंधित कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ।

सबसे पहले मुझे ऐसा लगता है कि गॉस्पेल की सबसे आम पहचान पहली सदी की ग्रीको-रोमन जीवनी से है। और मुझे लगता है कि ऐसे कई विद्वान हुए हैं जो पहली शताब्दी की ग्रीको-रोमन जीवनी की परंपराओं का पालन करते हुए और उन साधनों के माध्यम से संचार करने के लिए अधिक इच्छुक रहे हैं जिनसे पहली शताब्दी की ग्रीको-रोमन जीवनी संप्रेषित होती। लेकिन साथ ही यह भी स्पष्ट है कि लेखक ईसा मसीह के व्यक्तित्व और ईसा मसीह के जीवन पर अपने धार्मिक दृष्टिकोण को समझने का प्रयास कर रहा है।

तो शायद एक बेहतर वर्गीकरण यह होगा कि गॉस्पेल धार्मिक जीवनी हैं। और मुझे लगता है कि गॉस्पेल या यहाँ तक कि अधिनियमों को धार्मिक जीवनी के रूप में पहचानने के निहितार्थों में से एक यह है कि स्पष्ट रूप से किसी को यह पूछने की ज़रूरत है कि धार्मिक इरादा क्या है, न कि यह ऐतिहासिक रूप से ईसा मसीह के जीवन के बारे में क्या कहता है, हालांकि यह महत्वपूर्ण है। लेकिन यह भी समझने के लिए कि लेखक केवल यीशु द्वारा किए गए और कहे गए सभी कार्यों का ऐतिहासिक विवरण नहीं लिख रहे हैं।

लेकिन उनका एक धार्मिक उद्देश्य है। वे एक धार्मिक संदेश को संप्रेषित करने का प्रयास कर रहे हैं और किसी को आलोचनात्मक आलोचना जैसी चीज़ों के माध्यम से इसे उजागर करने का प्रयास करने की आवश्यकता है। हमने इस बारे में बात की कि लेखक अपनी सामग्री को कैसे व्यवस्थित करते हैं और विशेष रूप से अन्य सुसमाचार लेखकों की तुलना में संपादित करते हैं।

इससे मैथ्यू मार्क या ल्यूक या जॉन के धार्मिक इरादे के बारे में क्या पता चलता है जिस तरह से वे मसीह को चित्रित करते हैं। जबकि स्पष्ट रूप से अभी भी इतिहास में इसकी जड़ को पहचानते हुए कि कुछ हद तक गॉस्पेल का सामंजस्य एक योग्य लक्ष्य है क्योंकि यह स्थापित करने का प्रयास करता है कि क्या हुआ, क्या हुआ, वे ऐतिहासिक घटनाएँ क्या थीं जिनमें ईसा मसीह के जीवन की घटनाओं का लेखा-जोखा था सुसमाचार के लेखकों में से कुछ जड़ हो गए थे। इसलिए किसी को गॉस्पेल के धार्मिक इरादे को उजागर करना चाहिए और मुझे लगता है कि अभी भी ऐतिहासिक रूप से पुनर्निर्माण करने में सक्षम होना चाहिए कि क्या हो रहा था।

या बहुत कसकर बुने हुए तर्क पर आधारित नहीं लगते हैं। या एक उपवाक्य से उपवाक्य। लेकिन यह कहानियों और अनुच्छेदों के विभिन्न कार्यों पर अधिक निर्भर करता है। इसलिए मुझे लगता है कि विशेष रूप से गॉस्पेल के साथ पैराग्राफ के स्तर पर अधिक सोचना होगा।

अलग-अलग कहानियों के पैराग्राफ एक-दूसरे से कैसे संबंधित थे। लेकिन कभी-कभी भाषणों के साथ भाषण में तर्क और तर्क का पालन करना शायद थोड़ा अधिक महत्वपूर्ण होता है। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, मुझे भी लगता है कि अन्य गॉस्पेल की तुलना में प्रत्येक गॉस्पेल को यह पूछने के लिए पढ़ने की ज़रूरत है कि यीशु मसीह के जीवन और शिक्षा के संबंध में उनका विशिष्ट और अद्वितीय योगदान क्या है।

तो जैसा कि मैंने अभी पिछले बिंदु में कहा था, हालांकि ये जीवनियाँ हैं, इन्हें लेखक के अद्वितीय धार्मिक परिप्रेक्ष्य को समझने के लिए लिखा गया है। इसलिए हमें यह देखने और समझने के लिए कि मसीह के जीवन में उस लेखक का अद्वितीय योगदान क्या है, दूसरों की तुलना में पाठ और सुसमाचार को पढ़ने की आवश्यकता है। उनका अनोखा नजरिया क्या है।

मुझे यह दिलचस्प लगता है कि न्यू टेस्टामेंट कैनन में हमारे पास चार गॉस्पेल बचे हैं। चर्च के पास एक आधिकारिक सुसमाचार और ईसा मसीह का जीवन क्यों नहीं था? वास्तव में एक व्यक्ति है जिसने डायटेसारोन नामक दस्तावेज़ में ऐसा करने का प्रयास किया है।

चर्च की शुरुआती शताब्दियों में टाटियन नाम के एक व्यक्ति ने जॉन से शुरू करके गॉस्पेल को एक साथ जोड़ने की कोशिश की, जो दिलचस्प बात यह है कि आज ज्यादातर गैर-ईसाई विद्वान इसे ऐतिहासिक रूप से सबसे अविश्वसनीय मानते हैं। लेकिन उन्होंने जॉन के साथ शुरुआत की और ईसा मसीह के एक जीवन या एक सुसमाचार की रचना करने की कोशिश की। यह दिलचस्प है कि इसे कभी नहीं पकड़ा गया और चर्च ने चार अलग-अलग सुसमाचारों को कायम रहने दिया।

इसलिए मुझे लगता है कि हमें इसका सम्मान करना चाहिए और पूछना चाहिए कि गॉस्पेल के चार विशिष्ट योगदान क्या हैं। इससे पहले कि हम उनमें सामंजस्य बिठाने की कोशिश करें और उन्हें एक सुसमाचार में डालें और फिर से सामंजस्य स्थापित करें, सुसमाचार की अखंडता को समझने के लिए उनके पीछे छिपी ऐतिहासिक घटनाओं को समझना महत्वपूर्ण है। लेकिन इससे पहले हमें विभिन्न सुसमाचारों को कैनन के भीतर मसीह के जीवन के दृष्टिकोण की विविधता को बोलने की अनुमति देने की आवश्यकता है।

गॉस्पेल में दर्ज ईसा मसीह के जीवन और कथनों को पढ़ते हैं तो हमें यह पहचानने की आवश्यकता है कि वे चयनात्मक हैं। इसका मतलब यह है कि सुसमाचार के लेखक हमें मसीह के संपूर्ण जीवन या यीशु द्वारा किए गए और कहे गए हर काम का विस्तृत विवरण नहीं दे रहे हैं। वास्तव में यदि आप अध्याय 20 में जॉन के सुसमाचार के बिल्कुल अंत तक जाते हैं तो वह वास्तव में इसके ठीक विपरीत कहता है।

वास्तव में वह लगभग निराशा व्यक्त करता है कि कोई भी दस्तावेज़ यीशु द्वारा कही और की गई हर बात को शामिल करने की उम्मीद नहीं कर सकता है। लेकिन लेखकों के पास ईसा मसीह के जीवन और शिक्षाओं के बारे में जो भी जानकारी थी, उसमें से उन्होंने उन लोगों का चयन किया जो धार्मिक रूप से यह बता सकें कि वे ईसा मसीह के बारे में और ईसा मसीह के जीवन और शिक्षाओं के बारे में क्या कहना चाह रहे थे। और फिर चार अलग-अलग सुसमाचार मसीह के जीवन पर एक पूरक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

उससे संबंधित न केवल चयनात्मक हैं बल्कि अक्सर सुसमाचार लेखक सुसमाचार को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित नहीं कर रहे हैं। हाँ, ईसा मसीह के जन्म से लेकर उनके प्रारंभिक जीवन और सेवकाई से लेकर उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान तक का एक मोटा कालानुक्रम है। इसलिए एक मोटा कालक्रम है और अन्य समय में सुसमाचार लेखक स्पष्ट हैं कि वे अन्य सामग्री को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित कर रहे हैं।

लेकिन ऐसे भी समय होते हैं जब सुसमाचार के लेखक कालानुक्रमिक के बजाय सामग्री को विषयगत या तार्किक रूप से व्यवस्थित करने में अधिक रुचि रखते हैं। हमने मैथ्यू अध्याय 8 और 9 में देखा कि यह यीशु द्वारा किए गए चमत्कारों की कहानियों का एक संग्रह प्रतीत होता है जो उस क्रम में या सभी एक ही समय में नहीं हुए होंगे। और फिर इसमें कोई कठिनाई नहीं है यदि मैथ्यू स्वयं यह कहने का दावा नहीं करता कि यह वह क्रम है जिसमें वे घटित होते हैं या जिस क्रम में वे वास्तव में घटित हुए हैं।

और यह ईसा मसीह के जीवन का ठीक वही समय है जब ये सभी घटनाएँ घटित हुईं। इसके बजाय मैथ्यू को उन कहानियों को इकट्ठा करने में अधिक विषयगत रुचि हो सकती है जो इन विभिन्न चमत्कारों में यीशु मसीह के माध्यम से भगवान के शक्तिशाली कार्यों की गवाही देती हैं। या उदाहरण के लिए मार्क अध्याय 2 और 3 या मार्क 2 और 3 के बड़े भाग के खंडों में हमें यीशु और यहूदी नेताओं के बीच विवाद की कहानियों की एक श्रृंखला मिलती है जो फिर से सुझाव देती है कि शायद मार्क अध्याय 2 और 3 को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित नहीं किया गया है। सब एक दूसरे के ठीक बाद घटित हुआ।

लेकिन फिर शायद मार्क विभिन्न रूपों के अनुसार चीजों को अधिक विषयगत रूप से व्यवस्थित कर रहा है। उन्होंने कई विवादास्पद कहानियाँ ली हैं और उन सभी को एक ही स्थान पर एक साथ रख दिया है। तो फिर कभी-कभी सुसमाचार के लेखक हर समय सख्त कालक्रम के विपरीत विषयगत रूप से सामग्री को अधिक व्यवस्थित करते हुए लिख रहे होंगे।

कभी-कभी वे जो कुछ भी शामिल करते हैं उसमें बहुत चयनात्मक होते हैं। और फिर आप इसे मैथ्यू मार्क और ल्यूक की तुलना करके देख सकते हैं कि जाहिर तौर पर उनमें से प्रत्येक सुसमाचार लेखक विशेष रूप से मैथ्यू और मार्क या मैथ्यू और ल्यूक के पास ऐसी सामग्री है जो आपको मार्क में नहीं मिलती है। और मैथ्यू और ल्यूक दोनों के पास अद्वितीय सामग्री है जो आपको एक-दूसरे में नहीं मिलती क्योंकि वे फिर से चयनात्मक हो रहे हैं।

वे आपको यीशु द्वारा कही और की गई हर बात का विस्तृत विवरण नहीं दे रहे हैं, बल्कि अपने धार्मिक दृष्टिकोण को संप्रेषित करने के लिए चयनात्मक हैं। और यह पहली सदी की ग्रीको-रोमन जीवनी में उपयुक्त था। आपने इसी तरह लिखा।

गॉस्पेल की व्याख्या करने से संबंधित एक अंतिम सिद्धांत जिसका हमने भी उल्लेख किया है, विशेष रूप से जब यीशु के भाषणों या यहां तक कि अधिनियमों की पुस्तक में पात्रों के भाषणों की बात आती है, तो यह पहचानना है कि कभी-कभी हम जो पाते हैं और मैं¹ हम कहते हैं कि अक्सर हम जो पाते हैं वह लेखक द्वारा वास्तव में कही गई हर बात की शब्द दर शब्द रिपोर्ट के बजाय उस व्यक्ति द्वारा कही गई बातों का सटीक और पर्याप्त सारांश होता है। संभवतः ऐसे समय होते हैं जब लेखक कम से कम ग्रीक अनुवाद में यीशु द्वारा कही गई बातों को शब्दों में कैद करते हैं, लेकिन दूसरी बार यह पहली सदी की जीवनियों में पूरी तरह से उचित और मानक अभ्यास था कि किसी लेखक ने जो कहा, उसके सटीक सटीक शब्दों को दर्ज न किया जाए बल्कि सार को कैद किया जाए। या सारांश यह कि यीशु ने क्या कहा था। और जब तक वह सारांश सटीक और पर्याप्त रूप से उस अर्थ और इरादे को पकड़ लेता था जिसे लेखक व्यक्त करने की कोशिश कर रहा था, यह पूरी तरह से स्वीकार्य और पूरी तरह से उचित था।

हमारी आधुनिक दुनिया में जहां हम उद्धरणों में अधिक रुचि रखते हैं, जहां हम शब्दशः खातों में रुचि रखते हैं, जहां हम किसी के भाषण को शुरू और समाप्त करेंगे या यहां तक कि कुछ ऐसा जो हमने किसी अन्य दस्तावेज़ से निकाला है और उसे दिखाने के लिए उद्धरण चिह्नों के साथ कोष्ठक में रखा है। कि हमने शब्दों में कोई बदलाव नहीं किया है, वास्तव में उद्धरण चिह्न पहली सदी के भाषण की रिकॉर्डिंग की विशेषता नहीं रहे होंगे। वास्तव में, फिर से, आपके अंग्रेजी अनुवादों में जो उद्धरण चिह्न मिलते हैं, वे मूल ग्रीक पाठ में नहीं होते, बल्कि केवल आपको यह दिखाने के लिए होते हैं कि सुसमाचार लेखक किसी और के भाषण को रिकॉर्ड या रिपोर्ट कर रहे हैं। लेकिन फिर से, यह पहचानने के लिए कि वे ऐसा नहीं करते हैं, आपको एक-एक शब्द देकर, हर चीज़ का एक-एक करके ब्यौरा दीजिए।

यदि ऐसा होता, तो मुझे संदेह होता कि नए नियम के दस्तावेज़, विशेष रूप से सुसमाचार, उनकी तुलना में 50, 60, 70 गुना या उससे भी अधिक लंबे होंगे। उदाहरण के लिए, हम पहले ही पहाड़ी उपदेश का उल्लेख कर चुके हैं। यदि आप बैठ जाएं और पहाड़ी उपदेश को अच्छे अंग्रेजी अनुवाद में पढ़ें, तो मुझे लगता है कि इसे पूरा करने में आपको 10, 15 मिनट लगेंगे और हमने कहा कि यह संदिग्ध है कि यीशु ने केवल 10 या 15 मिनट ही बात की थी, लेकिन शायद उनका उपदेश कुछ समय तक चला।

लेकिन जब तक पहाड़ी उपदेश यीशु ने जो कहा था उसका सटीक और पर्याप्त प्रतिनिधित्व और सारांश है, तब तक कोई कठिनाई नहीं है। यह पहली शताब्दी में पूरी तरह से स्वीकार्य और सटीक और वैध माना गया होगा। इसलिए जब हम गॉस्पेल पढ़ते हैं, विशेष रूप से कथात्मक, तो हमें यह ध्यान में रखना होगा कि यह किस प्रकार का साहित्य है और यह किस प्रकार का साहित्य है जो इसकी ऐतिहासिकता के बारे में कहता है, यह धार्मिक रूप से संचार करने के तरीके के बारे में क्या कहता है और इसका अध्ययन करने में क्या है लेखकों के धार्मिक इरादे को समझना और यह समझना कि वे मसीह के जीवन में घटनाओं की रिपोर्ट कैसे करते हैं और भाषण की रिपोर्ट कैसे करते हैं।

न्यू टेस्टामेंट में अगला साहित्यिक प्रकार जिस पर हम संक्षेप में चर्चा करेंगे वह पत्र-पत्रिका साहित्य या न्यू टेस्टामेंट के पत्र हैं। हालाँकि यह कथा के साथ अगला है, कथा उतनी नहीं। मुझे कभी-कभी आश्चर्य होता है कि हमारे युग में, हमारे तकनीकी युग में, हम बहुत संक्षिप्त गुप्त रूप में इतनी जल्दी पाठ संदेश प्राप्त करने में सक्षम हो गए हैं और यहां तक कि ईमेल आदि भी। आदि कि हम बैठ कर कहानी सुनने और एक लंबी कहानी को पचाने में अपनी असमर्थता को और भी अधिक देख रहे हैं।

लेकिन कथा के बाहर, संभवतः नए नियम में साहित्यिक रूप जिससे हम सबसे अधिक परिचित हैं या जिसके साथ हमारी निकटतम सादृश्यता है, वह पत्र या पत्रियाँ होंगी। पहली शताब्दी में पत्र और पत्रियाँ संचार का एक बहुत ही सामान्य साधन थे। वस्तुतः कोई भी जानकारी, किसी भी

प्रकार की जानकारी, वस्तुतः कुछ भी एक पत्र या पत्र के माध्यम से संप्रेषित किया जा सकता है और मेरा उन दोनों में अंतर करने का इरादा नहीं है।

हालाँकि अतीत में पत्र और पत्रियों को अक्सर अलग किया गया है, मैं उन दोनों में अंतर नहीं करूँगा। लेकिन पत्री द्वारा वस्तुतः कुछ भी संप्रेषित किया जा सकता है। यह संचार का एक बहुत ही उपयोगी साधन था।

इसके अलावा, एक पत्र अक्सर लेखक की उपस्थिति के विकल्प के रूप में कार्य करता है। यानी, जब लेखक अपने पाठकों से दूरी के कारण अलग हो जाता था, तो एक पत्र उस दूरी को पाटने का एक तरीका था। वास्तव में वहाँ मौजूद व्यक्ति के लिए यह अगली सबसे अच्छी बात थी।

इसका उद्देश्य लेखक और उसके पाठकों के बीच की दूरी को दूर करना था। इसलिए पत्री के साथ लिखना संचार का एक बहुत ही सामान्य तरीका था। कुछ लोगों ने पत्रियों में संचार का एक अधिक सीधा साधन, काव्यात्मक और रूपक प्रकार के संचार के विपरीत संचार का एक अधिक उपदेशात्मक तरीका देखा है।

फिर भी, साथ ही, यह समझना महत्वपूर्ण है कि पत्रियों में भी हम अक्सर भाषा का आलंकारिक उपयोग पाते हैं। काव्यात्मक प्रकार की वाणी अथवा कविताओं का प्रयोग हमें मिलता है। कभी-कभी आपको रूपकात्मक प्रकार की भाषा मिलेगी।

इसलिए हमें पूरी किताब को केवल कलात्मकता की कमी के रूप में नहीं पढ़ना चाहिए या इसे केवल संचार के एक सीधे, शाब्दिक तरीके के रूप में नहीं देखना चाहिए। हालाँकि, फिर भी, कविता और अन्य प्रकार के साहित्य की तुलना में, यह अधिक सीधे, नीरस तरीके से संवाद करता है। हालाँकि, हमें अभी भी कलात्मकता के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है और, कभी-कभी, काव्यात्मक या यहाँ तक कि पूरे प्रकरणों में भाषा के रूपक उपयोग के प्रति भी।

पत्रियों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक जिसे वस्तुतः हर कोई पहचानता है और आमतौर पर पत्रियों पर चर्चा करते समय इंगित करता है, जिसे उनकी सामयिक प्रकृति के रूप में जाना जाता है। अर्थात्, पत्रियाँ बहुत विशिष्ट स्थितियों और बहुत विशिष्ट अवसरों के जवाब में लिखी जाती हैं। अर्थात्, वे समस्याओं, विशिष्ट समस्याओं के लिए लिखे गए हैं।

हमारे उद्देश्यों के लिए, पहली शताब्दी में चर्च के फैलने और स्थापित होने के साथ ही समस्याएं दुनिया और अन्य शिक्षाओं के सामने आने लगीं। नए नियम के पत्र कभी-कभी होते हैं क्योंकि वे उन समस्याओं के विशिष्ट उत्तर के रूप में लिखे जाते हैं। अर्थात्, पत्र केवल अक्षर स्वरूप में समाहित अमूर्त धर्मशास्त्र नहीं हैं।

पॉल या पीटर या जो कोई भी बस बैठ नहीं गया और उन्होंने जो सोचा था उसका एक धर्मशास्त्रीय सार-संग्रह लिखा और फिर एक पत्र के रूप में एक परिचय और निष्कर्ष संलग्न किया। इसके बजाय, पत्रों को अधिक देहाती या व्यावहारिक धर्मशास्त्र के रूप में देखा जा सकता है। अर्थात्, धर्मशास्त्र विशिष्ट परिस्थितियों और स्थितियों को संबोधित करता है।

अर्थात्, नए नियम के लेखक प्रत्येक धार्मिक विषय के बारे में जो कुछ भी सोचते हैं उसे दर्ज नहीं करते हैं, बल्कि वे बस, अपने धर्मशास्त्र के प्रकाश में, धार्मिक रूप से प्रतिक्रिया देते हैं। उनके धर्मशास्त्र को विशिष्ट मुद्दों और विशिष्ट समस्याओं के जवाब में पाठ में तैयार किया गया है या प्रस्तुत किया गया है। तो हां, धर्मपत्र अत्यधिक धार्मिक हैं, लेकिन फिर भी, हमें व्यवस्थित धर्मशास्त्र जैसा कुछ भी खोजने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए, बल्कि इसके बजाय हमें देहाती धर्मशास्त्र के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

चर्च में बहुत विशिष्ट मुद्दों के जवाब में धर्मशास्त्र। इसका मतलब यह है कि हमें उस स्थिति को फिर से बनाने की कोशिश करनी होगी जिसने पत्रों के लेखन को जन्म दिया, ताकि यदि आप पॉल के पत्रों में से किसी एक के साथ काम कर रहे हैं, जैसे कि गैलाटियंस की पुस्तक, तो आपको परिस्थितियों का कुछ अंदाजा होना चाहिए जिससे पत्र लिखने की प्रेरणा मिली। आपको कुछ हद तक उस अवसर को समझने की आवश्यकता है जिसके कारण यह पत्र आया।

तो यह हमें ऐतिहासिक आलोचना की ओर वापस ले जाता है। यानी दस्तावेज़ों के पीछे छिपी ऐतिहासिक परिस्थितियों को समझना। वे ऐतिहासिक परिस्थितियाँ जिन्होंने उन्हें जन्म दिया।

और यह पत्रों में निश्चित रूप से सच है क्योंकि वे कभी-कभार होते हैं। यानी, पॉल ने बैठकर पत्र लिखने का फैसला नहीं किया। उसने ऐसा किया, लेकिन उसने बैठकर एक पत्र लिखने का फैसला किया क्योंकि एक विशिष्ट समस्या थी जिसके बारे में उसे अवगत कराया गया था जिसके कारण उसे पत्र लिखना पड़ा।

उदाहरण के लिए, यदि आप 1 कोरिंथियन्स जैसा कोई दस्तावेज़ उठाते हैं, तो आपको कई मुद्दों या समस्याओं की एक श्रृंखला का सामना करना होगा। पहली सदी के कोरिंथ शहर में चर्च को किन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था जिसके कारण पॉल को सभी अलग-अलग जानकारी शामिल करनी पड़ी जो उसने की थी? जब आप 1 कुरिन्थियों को पढ़ते हैं, तो ऐसा लगता है कि पॉल कई विषयों को संबोधित कर रहा है। वास्तव में, पुस्तक हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि पॉल द्वारा चर्च छोड़ने, कोरिंथ में चर्च की स्थापना करने के बाद मुद्दों की एक श्रृंखला आई है।

और उसके जाने के बाद, कई समस्याएँ उत्पन्न हुईं, जो सबसे पहले, मौखिक रूप से पॉल को बताई गईं। किसी ने उन्हें मौखिक रूप से कुछ समस्याओं के बारे में बताया। लेकिन नंबर दो, ऐसा प्रतीत होता है कि कुरिन्थियों ने स्वयं पॉल को एक पत्र भेजा, जिसमें समस्याओं की एक श्रृंखला को अलग किया गया।

और इसलिए कुरिन्थियों को पॉल का पत्र, जिसे हम 1 कुरिन्थियन कहते हैं, वास्तव में उन मुद्दों को उठाता है जिनके बारे में उसे मौखिक रूप से और कुरिन्थ के एक पत्र द्वारा अवगत कराया गया है, और वह उनसे निपटता है। कठिनाई यह है कि यह पुनर्निर्माण करने का प्रयास किया जाए कि वास्तव में समस्याएँ क्या थीं और उनके कारण क्या थे, जिससे हमें उन समस्याओं के प्रति पॉल की प्रतिक्रिया को पूरी तरह से समझने में मदद मिल सके। इसलिए यह हमारा दायित्व

है कि हम कुछ हद तक उस स्थिति का पुनर्निर्माण करें जिसने पॉल के पत्रों को लिखने को जन्म दिया, समग्र स्थिति या उन विशिष्ट समस्याओं के पीछे की स्थिति जिनसे पॉल निपट सकता है।

विद्वान लोग इसे दर्पण को अक्षर पढ़ना भी कहते हैं। अर्थात्, अक्षरों को एक अर्थ में, एक दर्पण के रूप में देखा जाता है जो उस स्थिति को दर्शाता है जिसने इसे जन्म दिया। दूसरे शब्दों में, हमारे पास जो कुछ भी है, उस स्थिति तक हमारी एकमात्र पहुँच प्रतिक्रिया ही है।

और इसलिए हम उसमें प्रतिबिंबित या उससे प्रतिबिंबित होने का प्रयास करते हैं। हम पत्र को ही पढ़ने का प्रयास करते हैं कि पत्र लिखने के पीछे क्या परिस्थितियाँ रही होंगी। और जाहिर है कि इस प्रकार के दृष्टिकोण के साथ निश्चित रूप से कठिनाइयाँ हैं, लेकिन एक अर्थ में यह आवश्यक है क्योंकि गैलाटियन समुदाय की समस्या तक हमारी एकमात्र पहुँच गैलाटियन की पुस्तक ही है।

तो मिरर रीडिंग पत्र को पढ़ने के आधार पर एक तरह का प्रयास है और पत्र से मिले सुरागों को फिर से बनाने की कोशिश करना है कि पॉल के पत्रों या अन्य नए नियम, प्रथम पीटर, प्रथम जॉन, या जो भी हो, के पीछे की स्थिति सबसे अधिक संभावना थी। वास्तव में दो उपमाएँ हैं जो नए नियम के पत्रों को समझने में सहायक हो सकती हैं, और वे शायद पूर्ण नहीं हैं, लेकिन दो उपमाएँ हैं जिन्हें मैंने अक्सर व्याख्यात्मक पाठ्यपुस्तकों या पॉल के पत्रों की चर्चाओं में उपयोग किया है, और मैं कभी-कभी उनका उपयोग करूँगा मेरी कक्षाएँ। उनमें से एक है न्यू टेस्टामेंट के पत्रों को पढ़ने की तुलना किसी और के मेल को पढ़ने से की जा सकती है, या आज अधिक सटीक रूप से, किसी और के ईमेल को पढ़ने से की जा सकती है।

इसलिए यदि मेरे पास किसी और के कंप्यूटर तक पहुँच है और मैं स्क्रीन पर उनका एक ईमेल देखता हूँ, तो मैं उसे पढ़ सकता हूँ और पिछले संवाद या पिछले ईमेल को समझे बिना, यह समझे बिना कि वह व्यक्ति कौन है जिसे वे ईमेल कर रहे हैं, और उसकी स्थिति क्या है। ईमेल के माध्यम से आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला, और वे कौन सी समस्याएँ थीं जिनका समाधान किया जा रहा है, मुझे उस ईमेल को पढ़ने में कठिनाई हो सकती है। पॉल के पत्रों के साथ भी यही सच है। हम उन दस्तावेजों को पढ़ रहे हैं जो किसी और को संबोधित थे, और इसलिए हमें उस

पृष्ठभूमि को जितना संभव हो सके, और जितना संभव हो सके स्पष्ट रूप से, और जितना संभव हो सके पूरी तरह से पुनर्प्राप्त करने का प्रयास करना होगा।

पाठक कौन हैं? संकट क्या था? वह कौन सी समस्या थी जिसके कारण पॉल को बैठकर यह पत्र लिखना पड़ा, और उन समस्याओं के प्रति उस पत्र की प्रतिक्रिया कैसी थी? एक और सादृश्य जो मुझे अक्सर इस्तेमाल में आता है वह है फोन पर बातचीत के एक सिरे को सुनना। यह किसी और को बात करते हुए सुनने जैसा है, और आपकी पहुंच केवल उस व्यक्ति तक होती है जिसे आप सुन रहे हैं। आप नहीं जानते कि पंक्ति के दूसरे छोर पर क्या हो रहा है।

आप नहीं जानते कि वे किससे बात कर रहे हैं। आप उनकी समस्या या पिछले आदान-प्रदान के बारे में नहीं जानते हैं। आप उस समस्या को नहीं जानते जिसके कारण उनमें से एक को दूसरे को कॉल करना पड़ा, वह समस्या जिसके कारण सबसे पहले फोन पर बातचीत हुई।

और, लेकिन दिलचस्प बात यह है कि, कभी-कभी किसी की बातचीत सुनकर, आप यह पता लगा सकते हैं कि दूसरे छोर पर कौन हो सकता है, और वे किस बारे में बात कर रहे होंगे, और किस मुद्दे, और किस समस्या, और यहां तक कि दूसरा व्यक्ति क्या हो सकता है। जवाब में कह रहे हैं. तो, वे दो उपमाएँ सामयिक प्रकृति को समझने में सहायक हो सकती हैं, जिसे विद्वान पत्रों या पत्रियों की सामयिक प्रकृति कहते हैं। अर्थात्, उन्हें बहुत विशिष्ट अवसरों, या बहुत विशिष्ट परिस्थितियों को संबोधित किया गया था।

इसलिए, जब पत्रों की बात आती है तो व्याख्यात्मक प्रक्रिया के प्राथमिक लक्ष्यों या प्राथमिक विशेषताओं में से एक, कुछ हद तक उस परिस्थिति, अवसर, मुद्दों या समस्याओं को फिर से बनाने की क्षमता है जिसने इस पत्र को जन्म दिया है। . और हम पहले ही ऐतिहासिक पुनर्निर्माण, या ऐतिहासिक आलोचना के अंतर्गत कुछ उदाहरण दे चुके हैं। जहाँ तक, फिर से, हमने कुलुस्सियों के पत्र को देखा, उदाहरण के लिए, सबसे पहले, यह पता लगाना कि क्या कुलुस्सियन वास्तव में एक विशिष्ट झूठी शिक्षा को संबोधित कर रहे थे, उदाहरण के लिए।

और फिर, यदि ऐसा था, तो उस झूठी शिक्षा की प्रकृति क्या थी? और मैंने उसका सारांश दिया जो मैंने सोचा था कि यह हो सकता है, लेकिन निश्चित रूप से आप कुलुस्सियों को कैसे समझते हैं और पढ़ते हैं, कुछ मामलों में, आप उन सवालों के जवाब देने के तरीके से प्रभावित होंगे। इसलिए, नए नियम के दस्तावेज़ न केवल विभिन्न धार्मिक विषयों पर लेखक के धर्मशास्त्रीय प्रतिबिंब, या लेखक के धर्मशास्त्रीय विश्वास का सार-संग्रह हैं, बल्कि वे व्यावहारिक या देहाती धर्मशास्त्र हैं, पहले विभिन्न समस्याओं और कठिनाइयों के लिए धर्मशास्त्रीय प्रतिक्रियाएँ हैं। सदी चर्च। पत्र लेखन के बारे में उल्लेख करने योग्य एक और बात जिस पर हम लौटेंगे, और लेखकत्व के संबंध में संक्षेप में बात करेंगे, वह यह है कि पहली शताब्दी में पत्र लिखने का एक लगातार तरीका सर्वव्यापी था, या बस अत्यधिक होता। वस्तुतः सभी के लिए उपलब्ध, अमानुसेन्स, या सचिवों के प्रकार का उपयोग था।

यह एक तरह से धर्मग्रंथों के निर्माण के मानवीय तत्व को उजागर करता है, लेकिन अधिकांश, पहली शताब्दी के अधिकांश लेखकों ने खुद को अमानुएंसिस की सेवाओं का लाभ उठाया होगा। यानी, बहुत कम ही कोई व्यक्ति अकेले बैठकर पत्र लिखता था, लेकिन वे अक्सर इसे कुछ हद तक किसी अमानुएंसिस को, या किसी मुंशी की तरह लिखवाते थे, और फिर वह मुंशी वही लिखता था जो उन्हें कहने के लिए कहा गया था। आप, आप वास्तव में इसे रोमनों की पुस्तक के अंत में स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित होते हुए देखते हैं।

रोमन अध्याय, जब आप रोमन पढ़ रहे होते हैं, तो यह पॉल के किसी भी अन्य पत्र की तरह लगता है जो वह लिखता है, लेकिन जब आप रोमियों 16 के श्लोक 22 पर पहुँचते हैं, तो सबसे अंत में, जहाँ आपके पास शुभकामनाओं की यह श्रृंखला होती है जैसा कि आप किसी में पाते हैं पॉल का अन्य पत्र, और वह फिर से, पहली शताब्दी के पत्र की तरह ही विशिष्ट था। रोमियों 16 के पद 22 में, आप पाते हैं, मैं, टर्तियुस, जिसने यह पत्र लिखा है, प्रभु में आपको नमस्कार कहता हूँ। तो टर्तियुस शायद पॉल का अमानुएंसिस, या उसका मुंशी था, कि उसने रोमियों के पत्र को निर्देशित किया होगा।

और अब टर्टियस स्वयं, श्लोक 22 में, पाठकों का अभिवादन करते हुए, पत्र में अपनी टिप्पणी जोड़ता है। आगे बढ़ने के लिए, पहली सदी के पत्रों का एक और पहलू जिसके बारे में आपको जागरूक होना होगा, वह है पत्र-पत्रिका संरचना। यानी, पहली सदी के अक्षरों को एक साथ कैसे रखा गया था? इसे देखने से पहले एक बात का एहसास होना चाहिए कि अंतरों में से एक, कम से कम जहां तक मैं बता सकता हूं, विशेष रूप से पॉल के पत्रों के बीच, और यहां तक कि पॉल, यहां तक कि पीटर के पत्रों, उदाहरण के लिए, और, और पहली सदी के पत्रों के बीच रहा होगा। लंबाई।

पहली शताब्दी के अधिकांश पत्र जो हमारे पास उपलब्ध हैं, उदाहरण के लिए, पपीरी पर लिखे पत्रों की प्रतियां, या, आप जानते हैं, लंबाई में बहुत छोटे थे। विशेष रूप से पॉल के पत्रों में, एक अंतर यह है कि वे पहली शताब्दी के सामान्य पत्रों की तुलना में बहुत लंबे प्रतीत होते हैं। फिलेमोन पहली सदी के कई अक्षरों की लंबाई के करीब हो सकता है।

हालाँकि, एक विशिष्ट, एक विशिष्ट पत्र-पत्रिका संरचना में निम्नलिखित पाँच तत्वों में से अधिकांश शामिल हो सकते हैं। नंबर एक एक परिचय या अभिवादन है, जहां एक लेखक अपने और अपने पाठकों की पहचान अभिवादन के साथ करते हुए एक पत्र शुरू करेगा। तो x से y, , या कुछ इस तरह का।

इसलिए अक्सर वे परिचय और अभिवादन का विस्तार करेंगे। आम तौर पर परिचय के बाद धन्यवाद खंड, या धन्यवाद अवधि, या अनुभाग होता था, जहां एक लेखक कभी-कभी ग्रीको-रोमन देवताओं को धन्यवाद देता था, उदाहरण के लिए, प्राप्तकर्ता के स्वास्थ्य के लिए, या ऐसा कुछ। और जाहिर तौर पर नए नियम के लेखक, विशेष रूप से पॉल, आप उन्हें पाठक के संबंध में कुछ चीजों के लिए बाइबिल के भगवान को धन्यवाद देते हुए पाते हैं।

तो एक परिचय या अभिवादन, उसके बाद धन्यवाद। आमतौर पर इसके बाद पत्र का मुख्य भाग, जो लिखने का मुख्य कारण होता है, मुख्य सामग्री को संप्रेषित करता है। कम से कम पॉल के

पत्रों के लिए, आप अक्सर इसके बाद वह पाते हैं जिसे अक्सर जाना जाता है परानासिस , या उपदेश अनुभाग, जो शरीर की प्रमुख जानकारी पर आधारित है।

ये पवित्र जीवन के लिए आदेश और उपदेश हैं, जो इस पर आधारित है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह के माध्यम से अपने लोगों के लिए क्या किया है। और फिर आप आमतौर पर इसके बाद समापन विदाई पाते हैं, और कभी-कभी इसमें कुछ व्यक्तियों का अभिवादन भी शामिल होता है, जैसा कि हमने रोमन अध्याय 16 में देखा। उदाहरण के लिए, यदि आप एक उदाहरण के रूप में इफिसियों की पुस्तक को देखते हैं, तो आप इसे पाएंगे इस प्रारूप का बारीकी से अनुसरण कर रहे हैं।

उदाहरण के लिए, इफिसियों के अध्याय 1, 1, और 2, और छंद 1 और 2, परिचय और अभिवादन हैं, जहां पॉल, विशिष्ट स्वरूपों में, पॉल के रूप में, फिर से, आम तौर पर इन तत्वों का विस्तार करते हुए, पॉल यीशु मसीह के एक प्रेरित, चर्च, या इफिसुस में विश्वासयोग्य संतों के लिए, हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से आपको अनुग्रह और शांति, कुछ इसी तरह। अध्याय 1 और 3 से 23, धन्यवाद ज्ञापन के अनुरूप होंगे। हालाँकि पॉल इफिसियों में थोड़ा सा, कुछ थोड़ा अलग करता है, जहाँ वह शुरुआत में ही कुछ, एक आशीर्वाद, शामिल करता है जो एक यहूदी बराकाह, या आशीर्वाद से मेल खाता है।

हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर और पिता धन्य है, क्योंकि उसी ने ये सब काम किए हैं। लेकिन फिर वह पॉल के धन्यवाद में विलीन हो जाता है, जहां वह अपने पाठकों के जीवन के कुछ पहलुओं के लिए भगवान को धन्यवाद देता है। इसके बाद, शायद अध्याय 2 और श्लोक 1 में, कभी-कभी जो मुश्किल होता है, वह यह है कि कभी-कभी पॉल के कुछ पत्रों में यह पहचानना मुश्किल होता है कि शरीर कहाँ से शुरू होता है।

मुझे लगता है कि कुलुस्सियन एक अच्छा उदाहरण है जहां यह स्पष्ट नहीं है कि पॉल कब धन्यवाद से शरीर में विलीन हो गया। कभी-कभी मुझे लगता है कि वह बस ऐसा करता है, और जरूरी नहीं कि उसमें स्पष्ट परिवर्तन हो। लेकिन शायद अध्याय 2 और पद 1, इफिसियों के

अध्याय 3 और पद 21 के माध्यम से, मुख्य भाग हो सकता है, लेखन का मुख्य कारण, जहां वह अपने पाठकों को उन सभी की याद दिलाता है जो उनके पास हैं, और वे जो कुछ भी हैं, उनके आधार पर यीशु मसीह के साथ पहचान।

परानासिस, या उपदेश अनुभाग के बाद, आदेश और आदेश जो अध्याय 4 श्लोक 1, अध्याय 6 और श्लोक 20 में पाए जाते हैं। 620 उस आध्यात्मिक युद्ध खंड को समाप्त करता है, जो कि संपूर्ण उपदेश खंड के निष्कर्ष की तरह है। अक्षर। और फिर अंत में, इफिसियों 6 के छंद 21 से 24 अंतिम विदाई होगी, जो पहली शताब्दी के पत्र को निष्कर्ष तक पहुंचाने के लिए एक काफी मानक तरीके का पालन करेगी।

इसलिए जब, यदि आप पॉल के अधिकांश पत्र पढ़ते हैं, जिसमें पीटर और जेम्स के पत्र भी शामिल हैं, तो कभी-कभी वे कुछ विशिष्ट ग्रीको-रोमन पत्र की कुछ विशेषताओं को याद करते हैं, जैसा कि हम सोच सकते हैं। जेम्स के पत्र में कोई विशिष्ट धन्यवाद नहीं है, न ही यह पॉल के पत्रों की तरह विकसित होता है, जहां इसमें एक प्रकार का धार्मिक भाग होता है, उसके बाद एक उपदेशात्मक भाग होता है। लेकिन अधिकांश पत्र आप विशिष्ट पहली शताब्दी के ग्रीको-रोमन अक्षरों के मॉडल के रूप में पढ़ सकते हैं।

कुछ बातों का उल्लेख करना आवश्यक है, जहाँ तक व्याख्या पर इसके प्रभाव की बात है, निश्चित रूप से यह ध्यान देना उपयोगी है कि यदि आप किसी कविता की व्याख्या कर रहे हैं, तो यह कहाँ आती है, और यह पत्र में किस खंड में आती है। लेकिन नंबर एक, मुझे ऐसा लगता है, जो सबसे महत्वपूर्ण है वह है जब इनमें से किसी एक तत्व का विस्तार किया जाता है। हमें इस बात पर अधिक आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि पॉल द्वारा चर्च को लिखे गए पत्र की शुरुआत अभिवादन या अनुग्रह और शांति कहीं से भी होती है।

इससे हमें बहुत ज्यादा झटका नहीं लगाना चाहिए, शायद यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है। लेकिन जब वह उस पर विस्तार करता है, जब हम उसे विशिष्ट पत्र-पत्रिका सूत्र पर विकास और विस्तार करते हुए पाते हैं, तो यह उस चीज़ में महत्वपूर्ण हो सकता है जिस पर आप बैठना और ध्यान देना

चाहते हैं। इसलिए इस बात से अवगत रहें कि पॉल या अन्य लेखकों में से एक पहली शताब्दी के पत्र का एक विशिष्ट तत्व कहाँ से लेता है और उसका विस्तार करता है।

यह हमें इस बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी दे सकता है कि लेखक किस बात पर ज़ोर दे रहा है। एक और बात हो सकती है, विशेषकर पॉल के पत्रों के साथ, जब पहली शताब्दी के पत्र की एक निश्चित विशेषता गायब हो। उदाहरण के लिए, जब कोई गलातियों को लिखे पत्र को पढ़ता है, तो उस पत्र को पढ़ते समय सबसे पहली बात जो आप पहचानते हैं, खासकर यदि आपने पॉल के अन्य पत्र पढ़े हैं, तो वह यह है कि इसमें धन्यवाद ज्ञापन नहीं है।

तो यह अभिवादन, परिचय और अभिवादन के ठीक बाद है, जिसे पॉल दिलचस्प ढंग से विस्तारित करता है। ध्यान दें कि यह अध्याय एक के श्लोक एक से शुरू होता है, पॉल और प्रेरित आपको यह दिखाने के लिए कि ये दोनों तत्व कैसे विस्तार करते हैं, लेकिन लापता तत्व भी, यह कैसे काम कर सकता है। गैलाटियन्स के अध्याय एक से पांच तक, ध्यान दें कि पहली शताब्दी के पत्र की विशिष्ट विशेषताएं कैसे विस्तारित होती हैं।

पॉल, एक प्रेरित जिसे मनुष्यों की ओर से या मनुष्यों द्वारा नहीं, बल्कि यीशु मसीह और परमेश्वर द्वारा भेजा गया था, पिता जिसने उसे मृतकों में से उठाया और मेरे साथ सभी भाइयों को गलातिया के चर्चों में लाया। अब ध्यान दें कि एक प्रेरित के रूप में पॉल की पहचान, जो कि उसके पत्रों में विशिष्ट है, का विस्तार कैसे होता है। वह इसका वर्णन इस प्रकार करता है कि यह मनुष्यों से या मनुष्यों द्वारा नहीं, बल्कि यीशु मसीह और परमेश्वर, पिता द्वारा किया गया है।

जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि पॉल इस पर जोर देना चाहता है। वास्तव में, जब आप शेष पत्र पढ़ते हैं, तो यह उन मुद्दों में से एक लगता है जिनसे उन्हें निपटना होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि यह उन चीजों में से एक है जिसके लिए उनके विरोधी उनके प्रेरितिक अधिकार पर सवाल उठा रहे हैं।

और अब पत्र की शुरुआत में, वह एक प्रमुख विशेषता, एक प्रमुख विषय का संकेत देता है, जिस पर वह विचार करेगा कि उसका प्रेरितत्व मानव के माध्यम से नहीं है, उह, जो मनुष्यों द्वारा आता है, बल्कि वह है जो दैवीय अधिकार से आता है। . और फिर गैलाटिया के चर्चों के लिए, यह आश्चर्य की बात नहीं होगी, लेकिन अंतिम एक पर ध्यान दें, आपके लिए अनुग्रह और शांति, एक विशिष्ट पॉलिन अभिवादन, लेकिन ध्यान दें कि यह भगवान, हमारे पिता और प्रभु यीशु मसीह से कैसे विस्तारित होता है जिन्होंने खुद को इसके लिए दे दिया हमारे पापों को हमें वर्तमान बुरे युग से बचाने के लिए, परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार जिनकी महिमा युगानुयुग होती रहे। तथास्तु।

और उस लंबे विस्तार पर ध्यान दें, जो फिर से, मुझे लगता है, पत्र की एक और प्रमुख विशेषता है। उह, पॉल प्रदर्शित करना चाहता है, उह, या इस बिंदु पर, पॉल यह मान रहा है कि उसके पाठक उन्हें इस तथ्य से समझेंगे कि उन्हें वर्तमान दुष्ट युग से मसीह की मृत्यु के माध्यम से छुटकारा दिलाया गया है और बचाया गया है। गलातियों के शेष पत्र में, पॉल पुराने नियम के कानून को वर्तमान दुष्ट युग की श्रेणी में रखने जा रहा है।

ऐसा नहीं है कि यह बुरा या बुरा है, बल्कि यह सिर्फ इतना है कि कानून का वितरण यीशु मसीह से पहले पूर्णता के युग में हुआ था और पवित्र आत्मा का आगमन हुआ था। तो यदि पाठकों को वर्तमान दुष्ट युग से बचाया गया है, तो वे मोज़ेक कानून के अधीन होकर इसमें वापस क्यों जाना चाहते हैं, जिसे ये यहूदीवादी उन्हें स्वीकार करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास कर रहे हैं? तो शुरुआत में ही, पॉल पाठकों को अपने पक्ष में कर रहा है और प्रमुख विशेषताओं के लिए अनुमान लगा रहा है और बहस कर रहा है कि उसका प्रेरितिक अधिकार मनुष्यों से नहीं, बल्कि स्वयं ईश्वर और यीशु मसीह के माध्यम से और यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से आता है। एक नए युग का उद्घाटन हुआ है। उनके पाठकों को वर्तमान बुरे युग से बचाया गया है और इसलिए उन्हें एक नए युग में स्थानांतरित किया गया है।

तो वे पुराने युग में वापस क्यों जाना चाहेंगे, जिसकी विशेषता, उह, मोज़ेक कानून के प्रति समर्पण और प्रभुत्व है। और इसलिए पॉल पहले से ही, एक तरह से, अपने तर्क पर हावी हो रहा है और

अपने पत्र की महत्वपूर्ण विशेषताओं का अनुमान लगा रहा है कि कैसे वह विशिष्ट अभिवादन का विस्तार कर रहा है, उह, या मुझे क्षमा करें, पहली शताब्दी का विशिष्ट अभिवादन पत्र। तो मैं, इस बात पर ध्यान देकर कि कैसे, उह, कुछ सुविधाओं का विस्तार किया जाता है, महत्वपूर्ण हो सकता है।

आखिरी वाला है, जैसा कि हमने अभी कहा, दूसरा है जो हटाया गया है उस पर ध्यान देना। ध्यान दें कि पाँच और छह के बीच की कविता में, जो गायब है वह विशिष्ट धन्यवाद है। श्लोक छह बस शुरू होता है, मुझे आश्चर्य है कि आप इतनी जल्दी उसे त्याग रहे हैं जिसने आपको यीशु मसीह की कृपा से बुलाया है।

शायद यह देखने के लिए बहुत अधिक चिंतन की आवश्यकता नहीं है कि पॉल ने थैंक्सगिविंग को क्यों छोड़ दिया। सबसे अधिक संभावना है कि वह स्थिति से बहुत परेशान है। यह इतना जरूरी है और शायद पाठक जो कर रहे हैं उससे वह इतना परेशान और आश्चर्यचकित है कि उसके पास आभारी होने के लिए कुछ भी नहीं है।

ऐसा नहीं है कि उसके पास आभारी होने के लिए कुछ भी नहीं था, लेकिन, एक अर्थ में, शायद शॉट वैल्यू के लिए, वह सिर्फ थैंक्सगिविंग को छोड़ देता है जहां एक पाठक ने इसकी उम्मीद की होगी और सीधे समस्या के केंद्र में कूद जाता है। तो फिर, इस बात पर ध्यान देकर कि किसी अक्षर की कुछ विशेषताओं का विस्तार और विकास कैसे किया जाता है, या जब वे होते हैं, तब भी वे गायब होते हैं, यही वह समय होता है जब आप बैठना और ध्यान देना चाहते हैं। अपने अगले सत्र में, हम पहली शताब्दी में पत्र-पत्रिका साहित्य के बारे में थोड़ी और बात करेंगे और यह कैसे हमारे पत्रियों को पढ़ने और पत्रों और पत्रों की व्याख्या करने के तरीके को प्रभावित कर सकता है, और फिर अंतिम साहित्यिक प्रकार या शैली पर आगे बढ़ेंगे। नया नियम, जो सर्वनाश या रहस्योद्घाटन की पुस्तक है।